

इस्त्राईली कौम

रेगिस्तान में



isrāīlī qaum registān men
The Israelites in the Desert

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: R. Gunther (www.lambsongs.co.nz), S. Bentley
(www.freebibleimages.org)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

इसराईलियों ने अपने खुदा से कितने मोज़िज़े देखे थे। बार बार खुदा ने उनसे वादा किया था कि वह उन्हें मिसर की गुलामी से छुड़ाएगा। अब उसका वादा पूरा हो चुका था। आइए हम पढ़ें कि तौरेत शरीफ में क्या लिखा है :

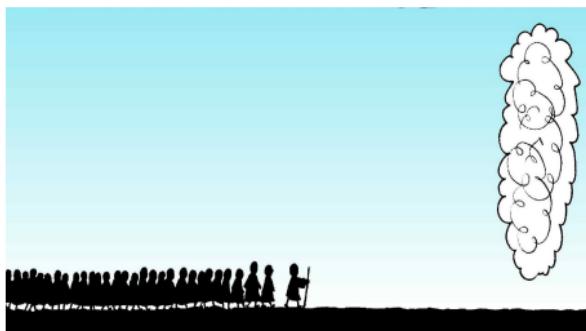


मिसर से निकलने का रास्ता

फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिसर की गुलामी से निकले।”

जब फ़िरैन ने इसराईली क़ौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, “अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ाना पड़ेगा। ऐसा

न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।” इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-कुलजुम की तरफ बढ़े। मिसर से निकलते वक्त मर्द मुसल्लह थे।



रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफर कर सकते थे। दिन के वक्त बादल का सतून और रात के वक्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।



तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़ी-ह़खीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर अपने खैमे लगाएँ। यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा है। [...] लेकिन मैं फ़िरौन और उसकी पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना ख्याल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी खिदमत से महरूम हो गए हैं।” चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार

करवाया और अपनी फौज को लेकर निकला। वह 600 बेहतरीन क्रिस्म के रथ और मिसर के बाकी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे।



जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उसकी फौज को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह सख्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीखने-चिल्लाने लगे। उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? क्या हमने मिसर में आपसे दरखास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की खिदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के गुलाम रहते।”

लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”



फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यों चीख रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली खुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे।

अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की

तरफ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के क़रीब न आ सके।

मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही।



उसने समुंदर को पीछे हटाकर उसकी तह खुशक कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया तो इसराईली समुंदर में से खुशक ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए। सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू



पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”



तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को ढुबो देगा।”

मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक्त पानी मामूल के मुताबिक बहने लगा, और जिस तरफ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर गरक़ कर दिया। पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फिरैन की पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक़कुब कर रही थी ढूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा।

लेकिन इसराईली खुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।



उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। [...] जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम कुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का खौफ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके खादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

मूसा का गीत

तब मूसा और इसराईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा,
क्योंकि वह निहायत अज़ीम है।
रब मेरी कुब्बत और मेरा गीत है,
वह मेरी नजात बन गया है।
वही मेरा खुदा है, और मैं उसकी तारीफ करूँगा।
वही मेरे बाप का खुदा है, और मैं उसकी ताज़ीम करूँगा।
ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है?
कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है?
कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता
और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है?
कोई भी नहीं।
अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी क्रौम को छुटकारा दिया
और उसकी राहनुमाई की है,
अपनी कुदरत से तूने उसे अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह तक
पहुँचाया है।
रब अबद तक बादशाह है!”



तब हारून की बहन मरियम जो नविया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं।

मरियम ने यह गाकर उनकी राहनुमाई की, “रब की तमजीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। ”

सवाल

- इसराईलियों ने बार बार खुदा के अज़ीम काम देखे थे। अब जब वह मिसर से निकलने लगे तो क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को छोड़ दिया?
 - ▶ हरगिज़ नहीं! खुदा क़दम बक़दम उनके साथ चलता रहा।
- उसने किस तरह उनकी राहनुमाई की?
 - ▶ वह खुद उनके दरमियान रहा। दिन के वक्त बादल के सतून में और रात के वक्त आग के सतून में। साथ साथ अल्लाह हज़रत मूसा को फ़रमाता रहा कि उन्हें क्या करना है और किस तरह क़ौम की राहनुमाई करनी है। बिलकुल उसी तरह जिस तरह एक ज़बूर में लिखा है,

उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए। (ज़बूर 103:7)

- क्या हम भी खुदा की राहनुमाई का तजरिबा कर सकते हैं?
 - ▶ ज़रूर, जब हम उसकी क़ौम में शामिल हो जाते हैं। खुदा क़ौम से कहीं दूर नहीं रहता बल्कि वह अपनी क़ौम के दरमियान ही मौजूद रहता है। अल्लाह बेपरवा नहीं है। उसे फ़िकर है कि इसराईली किस राह पर चल रहे हैं। बिलकुल इसी तरह उसे बड़ी फ़िकर है कि हम किस राह पर चलते हैं। वह हमें अच्छी राह पर लाना चाहता है। यों ज़बूर में वह वादा करता है,

मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा। (ज्बूर 32:8)

इसलिए हम हज़रत दाऊद के साथ दुआ कर सकते हैं,

अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का खुदा है।
(ज्बूर 25:4-5)

- लेकिन लगता है कि खुदा से ग़लती हुई है, कि वह इसराईली क़ौम को ग़लत राह पर लाया है। क्योंकि चलते चलते उनको पता चलता है कि उनके सामने समुंदर है जबकि दुश्मन उनका पीछा कर रहा है। मिस्री फ़ौज पहुँचनेवाले हैं, और कोई सहारा नहीं। बचने का रास्ता कहीं दिखाई नहीं देता। इसराईलियों की मौत यकीनी लगती है। अगर हमारे साथ ऐसा होता तो हम क्या करते? क्या हम मुतम़इन रहते या परेशान हो जाते?
 - ▶ बेशक हम डर के मारे पिघलने लगते।
- इसराईलियों ने क्या महसूस किया?
 - ▶ वह भी सख्त डर गए।

- यह खतरा देखकर उन्होंने क्या किया?
 - वह गालियाँ कसने लगे। हज़रत मूसा को बुरा-भला कहने लगे। कहने लगे कि तूने हमें इस फंदे में क्यों फँसाया?
- हज़रत मूसा ने जवाब में क्या किया?
 - इसका सिर्फ़ एक सही जवाब था और वह था खुदा से इल्लिज़ा।
- क्यों?
 - अल्लाह ने तो वादा किया था कि वह इसराईली क़ौम को मिसर के जुल्मो-सितम से बचाएगा। बेशक हज़रत मूसा को भी सख्त डर और परेशानी थी। मगर उन्होंने अपनी परेशानी अपने खुदा के सामने रखकर क़ौम की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह खुदा पर भरोसा रखे,

“मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”

(खुरूज 15:13-14)

तब खुदा ने नजात का अपना मनसूबा उन पर ज़ाहिर करके उन्हें समुंदर में से गुज़रने दिया।

● क़ौम ने क्या जवाब दिया?

► लोग नजात के इस मनसूबे पर एतमाद करके समुंदर में से गुज़र गए। उन्होंने अल्लाह के कलाम पर भरोसा किया। उनका ईमान पुख्ता था कि हम समुंदर की तह पर चलते चलते दूसरे साहिल तक पहुँचेंगे। यों लिखा है,

यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-कुलजुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह खुशक ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश की तो वह ढूब गए। (इबरानियों 11:29)

हज़रत दाऊद भी एक ज़बूर में फ़रमाते हैं,

तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी। जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद किया तो शरमिंदा न हुए। (ज़बूर 22:4-5)

क़ौम को खुदा पर भरोसा है, और इस बिना पर वह अपनी क़ौम को बचाता है। उसका यह मोजिज़ा ज़बूर में भी बयान किया गया है,

तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था। उसने बहरे-कुलजुम को डिड़का तो वह खुशक हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से। उसने उन्हें नफ़रत करनेवाले के हाथ से छुड़ाया और एवज़ाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।

(ज़बूर 106:8-10)

आइए, हम भी अल्लाह के हुज़ूर आएँ जब हम परेशानियों से धिरे रहते हैं। जब कभी हज़रत दाऊद को डर लगता तो वह खुदा के हुज़ूर आकर इल्लिजा करता और नतीजे में मदद मिलती थी।

लेकिन जब खौफ मुझे अपनी गिरिफ़त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ। अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़्र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डऱंगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है? (ज़बूर 56:3-4)

यसायाह नबी भी इस पर ज़ोर देता है कि हम न डरें बल्कि परेशानी के वक़्त खुदा की तरफ रुजू लाएँ, उसी को तकते रहें।

धड़कते हुए दिलों से कहो, “हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा खुदा [...] तुम्हें बचाने के लिए आ रहा है।” (यसायाह 35:4)

हज़रत ईसा को भी मालूम है कि हम जो इनसान हैं हमेशा परेशान रहते हैं। इसलिए वह फ़रमाते हैं,

तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। (यूहन्ना 14:1)

एक बार जब पौलुस रसूल को मरने का खतरा था तो उन्होंने बाद में लिखा,

हमने महसूस किया कि हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता है। उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। (2 कुर्रिथियों 1:9-10)

आज भी खुदा चाहता है कि हम उस पर पूरा भरोसा रखें। न वह इससे ज़्यादा माँगता है न कम।

लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देखकर खुशी मनाएगा। मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है। (ज़बूर 13:5-6)

नजात पाने पर इसराईली क़ौम ने अल्लाह का शुक्र करके उसकी तमजीद की। हज़रत मूसा ने उसकी तारीफ़ में एक गीत भी लिखा।

हज़रत दाऊद अपने ज़बूरों में भी बार बार अपने खुदा की हम्दो-सना करता है।

रब की तमजीद हो,
क्योंकि उसने मेरी इल्लिजा सुन ली।
रब मेरी कुब्बत और मेरी ढाल है।
उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा,
उससे मुझे मदद मिली है।
मेरा दिल शादियाना बजाता है,
मैं गीत गाकर उसकी सताइश करता हूँ।
(ज़बूर 28:6-7)

- क्या इसराईली यह तमाम अज़ीम काम देखकर अब से खुदा पर भरोसा रखते और उसकी सताइश करते रहे?
 - आइए हम देखते हैं कि इसके बाद क्या हुआ।



मन और बटेरें

इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफर करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची [...]। रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के खिलाफ बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम-अज़-कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।”

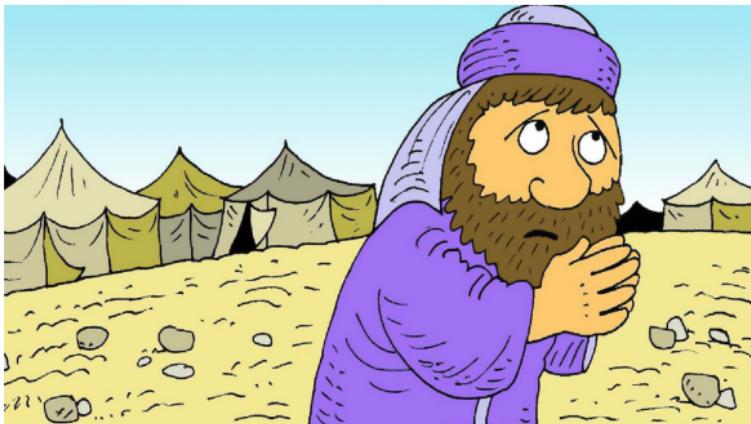
तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आज़माकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि



एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छटे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

मूसा और हारून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। फिर भी रब तुमको शाम के वक्त गोश्त और सुबह के वक्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ हैं।”

मूसा ने हारून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’”



जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ देखा। वहाँ खब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। खब ने मूसा से कहा, “मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज गुरुब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं खब तुम्हारा खुदा हूँ।’”

उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी खैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह खैमे के चारों तरफ ओस पड़ी थी। जब ओस सूख गई तो बर्फ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हूँ?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है।



मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके खानदान को ज़रूरत हो। अपने खानदान के हर फ्रंट के लिए दो लिटर जमा करो।”

इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी



था। जिसने ज्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।

इसराईलियों ने इस खुराक का नाम 'मन' रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।

चटान से पानी

फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने खैमे लगाए।

वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, "हमें पीने के लिए पानी दो।"



मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झागड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?”



लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”

तब मूसा ने रब के हुज्जूर फरियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।”

रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुजुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”



मूसा ने इसराईल के बुजुर्गों के सामने ऐसा ही किया। उसने उस जगह का नाम 'मस्सा और मरीबा' यानी 'आज़माना और झगड़ना' रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

सवाल

- क्या इसराईली हमेशा खुदा पर भरोसा रखते रहे? क्या वह हर वक्त खुदा की तरफ देखते रहे?
 - हरगिज़ नहीं। ज्योंही उन्हें किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता तो उन्हें अल्लाह की मदद और अज़ीम काम याद न रहते। वह अपनी परेशानियाँ खुदा को पेश करके उसकी मदद माँगना भूल जाते थे।
- इसके बरअक्स वह क्या करते थे?
 - जब भी उन्हें दिक्कत महसूस होती तो वह शिकायत करते और हज़रत मूसा से नाराज़ होकर उन पर इलज़ाम लगाते। उन्हें याद न रहता कि उन्हें खुदा पर भरोसा रखना और उससे इल्लिजा करना चाहिए। हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि तुम मुझसे नहीं बल्कि अल्लाह से शिकायत कर रहे हो। हम ज़बूर में भी यह कुछ पढ़ते हैं, कि खुदा की क़ौम कितनी बेवफ़ा रही और कि खुदा इसके बावजूद कितना वफ़ादार रहा। उसने बार बार हज़रत मूसा की सुनी जब उसे बुङ्बुङ्गाती क़ौम की सिफ़ारिश करनी पड़ी।

मुल्के-मिसर के इलाके जुअन में उसने उनके बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे। समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा। दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर चमकदार आग से उनकी क्रियादत की। रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया। [...] लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।

(ज़बूर 78:12-15,17)

जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दद मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुंदर यानी बहरे-कुलजुम पर सरकश हुए। तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था। [...] तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान लाकर उसकी मद्हसराई की। लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए। वह उसकी मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार

न थे। रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़माया। तब उसने उनकी दरखास्त पूरी की।

(ज़बूर 106:7-8,12-15)

मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है। जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है। [...] आसमान के खुदा का शुक्र करो, क्योंकि उसकी शफ़क़त अबदी है।

(ज़बूर 136:3-4,26)

खुदा ने अपनी क़ौम को मिसर की गुलामी से निकालकर छुड़ाया। वह अपनी क़ौम से मुहब्बत रखता, उसकी मदद करता और उसे सब कुछ मुहैया करता है। वह उससे रिफ़ाक़त रखना चाहता है। ताहम इसराईली अपने खुदा को भूलकर गुनाह करते थे। वह यों गुनाह करते थे जिस तरह तमाम इनसान हज़रत आदम और हव्वा से लेकर आज तक करते आए हैं।

खुदा चाहता है कि हम उस पर भरोसा रखें, तसलीम करें कि वह हमारा खुदा और हमारा नजात देनेवाला है। वह यह भी चाहता है कि हम एक दूसरे के साथ न झगड़ें बल्कि सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारें। इसलिए उसने हज़रत आदम और हब्बा की औलाद को अहकाम बख्शा दिए ताकि वह उनकी मदद से उसकी मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर कर सकें। इसके दस मरकज़ी अहकाम थे। इनमें से कुछ दिखाते हैं कि हमारा अल्लाह के साथ सुलूक कैसा होना चाहिए। दूसरे ज़ाहिर करते हैं कि हमारा एक दूसरे के साथ बरताव कैसा होना चाहिए। आइए हम तौरेत शरीफ को पढ़ें।



कोहे-सीना

इसराईलियों को मिसर से सफर करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।

तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याकूब के घराने बनी इसराईल को बता, ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर

तमाम क़ौमों में से मेरी खास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, लेकिन तुम मेरे लिए मख्खसूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।’ अब जाकर यह सारी बातें इसराईलियों को बता।”

मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क़ौम के बुजुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। जवाब में पूरी क़ौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को क़ौम का जवाब बताया।

जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।”

तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने की थीं। रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख्खसूसो-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा। लोगों की हिफाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हटें मुकर्रर कर। उन्हें खबरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए।



तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर धना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। खैमागाह में लोग लरज़ उठे। तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए खैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्धत से लरज़ने लगा। नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।



लोग घबरा जाते हैं

जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह खौफ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएँगे।”

लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका खौफ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।



दस अहकाम

तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फरमाईं,

- “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

- अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। न बुतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर खुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।
- रब अपने खुदा का नाम बेम़क़सद या ग़लत म़क़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।
- सबत के दिन का ख़्याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह म़ख़सूसो-मुक़द्दस हो। हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह म़ख़सूस और मुक़द्दस हो।

- अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।
- क़त्ल न करना।
- ज़िना न करना।
- चोरी न करना।
- अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।
- अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उसकी बीवी का, न उसके नौकर का, न उसकी नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को बता, ‘तुमने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। मेरे लिए मिट्टी की कुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में कुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा। [...] जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर।

सवाल

अब क़ौम को खुदा का तजरिबा हुआ था, और उन्हें उन अहकाम की समझ आई जो अल्लाह ने दिया था।

- क्या वह अब से इन अहकाम के तहत रहे?
- क्या अब से इसराईलियों को खुदा और उसकी बातें याद रहीं?
- क्या वह अब से गुनाह करने से बाज़ रहे?
- क्या वह अब से यों ज़िंदगी गुज़ारने लगे कि खुदा उनसे रिफ़ाक़त रख सके?
- आपका क्या ख्याल है?

जो मज़ीद तफ़सील से हज़रत मूसा के बारे में पढ़ना चाहता है वह तौरेत में खुर्ज 13 से लेकर 20 तक पढ़े।